राजस्थान
हाड़ोती पुरातत्व
एक अध्ययन

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
पूर्व संयुक्त निदेशक
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

श्री उमराव सिंह
कोटा वृत अधीक्षक
पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

RAJASTHAN : HADOTI PURATTAV EK ADHYAN

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights Ⓟ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-40-6
FIRST EDITION, OCTOBER 2022, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

स्वायत्त शासन, नगरीय
विकास एवं आवासन विभाग,
विधि एवं विधिक कार्य
और विधि परामर्शी तथा
संसदीय मामलात विभाग
राजस्थान सरकार
दिनांकः 18.09.2022

सत्यमेव जयते

"kkfUr /kkjhoky
e=h

–संदेश–

मुझे यह जान कर प्रसन्नता है कि कोटा के निवासी राजस्थान सरकार में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के पूर्व ज्वाइंट डायरेक्टर, लेखक एवं पत्रकार डॉ. प्रभात कुमार सिंघल ''राजस्थान : हाड़ोती पुरातत्व एक अध्ययन'' विषय पर एक पुस्तक लिख रहे हैं।

सर्व विदित है कि कोटा परिक्षेत्र प्राचीन समय से कला–संस्कृति और पुरातत्व का महान केंद्र रहा है। सभ्यता के विकास के चिन्ह अलनिया सहित बूंदी जिले के कई स्थानों से आदिमानव द्वारा चट्टानों में बनाए गए शैल चित्रों से ज्ञात होते हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र जिसमें वर्तमान कोटा, बूंदी, झालावाड़ और बारां जिले आते हैं किलों, महलों, मंदिरों, मस्जिदों, छतरियों, बावड़ियों आदि के रूप में संस्कृति और पुरातत्व के प्रमाण बड़ी संख्या में मौजूद हैं। इन्ही स्थानों से प्राप्त मूर्तियों और कलात्मक प्रस्तर खंड़ों को जिलों के संग्रहालयों में पर्यटकों के लिए प्रदर्शित किया गया है। पुरातत्व सम्पदा से भरपूर क्षेत्र की संस्कृति की भी अपनी अलग पहचान है। इनके साथ–साथ अनेक पर्यटक स्थल भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

राजस्थान सरकार हेरिटेज संरक्षण और पर्यटन विकास की दिशा में सक्रिय है और नूतन प्रयास किये जा कर कई योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। कोटा में पर्यटन विकास की दृष्टि से हेरिटेज संरक्षण शहर का सौंदर्यकरण, चम्बल रिवर फ्रंट, सिटी पार्क का विकास आदि

अनेक योजनाएं आने वाले समय में पर्यटन में विकास में मील का पत्थर बनेगी।

मुझे आशा है इस पुस्तक में इन सभी योजनाओं का भी समावेश किया जाएगा। मैं अपनी ओर से पुस्तक के लेखक डॉ. सिंघल को उनके श्रमसाध्य कार्य के लिए बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

¼'kkfUr /kkjhoky½
ea=h

Mk- iHkkr dqekj fla?ky
1–F–18, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
कुन्हाड़ी, कोटा (राजस्थान)

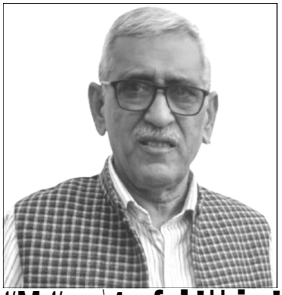

çk- ¼M,½ c t fd'kkj 'kekZ
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग और निदेशक (अकादमिक), से. नि.,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

çkDdFku

पुरातत्व शब्द संस्कृत के शब्द 'पुरा' उपसर्ग, जिसका शाब्दिक अर्थ है प्राचीन (पुराना) और तत्व का अर्थ है वस्तु, अर्थात पुरातत्व का मतलब 'प्राचीन वस्तु' से है। 'पुरातत्व' यूनानी शब्द 'अर्कियोलोजिया' से निर्मित 'आर्कियोलोजी' शब्द का हिन्दी पर्याय है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भारत की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिए एक प्रमुख संगठन है। इसका प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों का रखरखाव करना है। इस कार्य के लिए सम्पूर्ण भारत को 24 मंडलों में विभाजित किया गया है। संगठन के पास मंडलों, संग्रहालयों, उत्खनन शाखाओं, प्रागैतिहासिक शाखा, पुरालेख शाखाओं, विज्ञान शाखा, उद्यान शाखा, भवन सर्वेक्षण परियोजना, मंदिर सर्वेक्षण परियोजनाओं तथा अन्तरजलीय पुरातत्व स्कन्ध के माध्यम से पुरातत्वीय अनुसन्धान परियोजनाओं के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित पुरातत्वविदों, संरक्षकों, पुरालेखविदों, वास्तुकारों तथा वैज्ञानिकों का कार्यदल है।

भारत में लगभग 3600 से अधिक प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थलों और राष्ट्रीय महत्व के अवशेष चिन्हित हैं। ये स्मारक विभिन्न काल प्रागैतिहासिक काल से औपनिवेशिक काल तक और विभिन्न भौगोलिक संरचना में स्थित हैं। इनमें मंदिरों, मस्जिदों, कब्रों, चर्चों, कब्रिस्तान, किलों, महलों, कदम–कुएं, रॉक–कट गुफाओं और धार्मिक वास्तुकला के साथ–साथ प्राचीन घाटियों और स्थलों आदि के रूप में हैं, जो प्राचीन निवास के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के विभिन्न मंडलों के माध्यम से यह स्मारक और स्थल संरक्षित किए जाते हैं, जो पूरे देश में फैले हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का मुख्यालय दिल्ली में है। विभाग द्वारा स्मारकों और संरक्षण गतिविधियों पर शोध भी किया जाता है।

भारत में विलियम जोन्स द्वारा 15 जनवरी 1784 को कोलकाता के विलियम फोर्ट में बंगाल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की गई। इसी के साथ प्राचीन भारतीय इतिहास और साहित्य का व्यवस्थित अध्यन आरंभ हुआ। वर्ष 1861ई. में अल्कजेंडर कनिंधम ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना की और उन्हें इसका प्रथम महानिदेशक बनाया गया। वर्ष 1904 ई. में लार्ड कर्जन ने प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम लागू किया था। वर्तमान में भारत में 1958 का प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम प्रभावी है।

भारत में राजस्थान का ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक वैभव अत्यंत समृद्ध एवं बेजोड़ है। इसमें दुर्गम स्थानों पर निर्मित युद्धों के साक्षी किले, दुर्ग, स्मृतियों में बनी छतरियां, सज्जायुक्त एवं समृद्ध राजप्रासाद, शैलचित्र युक्त गुफाएं, विशाल बावड़ियां, कुँए व कुंड, रंगचित्रों एवं कांच, स्वर्ण आदि से सुसज्जित हवेलियां आदि पुरातत्व की अमूल्य धरोहर हैं जो सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र भी हैं। विश्व की पांच हजार वर्ष सबसे प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का पालन स्थल रहे राजस्थान के कालीबंगा में इस सभ्यता के चिन्ह पाए

जाते हैं। वहीं वैदिक सभ्यता का जन्म स्थल सप्त– सेंधव प्रदेश का गौरव सरस्वती नदी प्रदेश की प्राचीनता का बोध कराती है। राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल से लेकर पुरा पाषाणकाल, नव पाषाणकाल, मध्य पाषाणकाल, लौह युगीन और ताम्र युगीन सभ्यताओं के अवशेष विविध नदियों के किनारे समय – समय पर किए गए उत्खनन कार्य में पाए गए हैं। हनुमानगढ़ के कालीबंगा, रंगमहल, उदयपुर के आहड़,बालाथल, राजसमंद के गिलूंड, भीलवाड़ा के बागोर, ओझियाना, सीकर के गणेश्वर, चित्तौड़गढ़ के नगरी, जयपुर के जोधपुरा, बेराठ, झुंझुनू के सुनारी, भरतपुर के नूह और टोंक के नगरफोर्ट एवं रेंड, बूंदी के केशोरायपाटन और नैनवा के टीलों सहित कई और स्थानों से किए गए उत्खन कार्य में विभिन्न काल की सभ्यताओं का पता चला है।

राजस्थान का हाड़ोती क्षेत्र जिसमें कोटा, बारां, बूंदी एवं झालावाड़ जिले आते हैं में भी कई स्थानों से सभ्यताओं के प्रमाण उत्खनन में प्राप्त हुए हैं और कुछ लोगों ने खोजे हैं। कोटा में आलनिया में नदी के किनारे आदि मानव द्वारा निर्मित शैलचित्र पाए जाने से प्रागैतिहासिक सभ्यता का पता चलता है। कंसुवा मन्दिर से मौर्य शासक धवल का 738 ई.का शिलालेख मिला है। बूंदी जिले के गरदडा, सीसोल, नैनवा, बारां जिले के काकोनी, रेलावन एवं झालावाड़ जिले के कोटड़ा, चंद्रावती, खानपुर,आदि से पुरास्थलों का पता चलता हैं। बून्दी, कोटा, झालावाड़ के राजमहल, दलहनपुर, मऊबोरदा, काकोनी, कृष्ण विलास, गड़गछ, गंगधार जैसे पुरास्थल, चौरासी खम्भों की छतरी, रानी जी की बावड़ी बूंदी के शैलाश्रयों में बने शैलचित्र, गढ़ पैलेस, बृज विलास, तथा कौलवी की बौद्ध गफाएँ यहाँ की महत्वपूर्ण घरोहर हैं।

हाड़ोती में स्थित तारागढ़, शेरगढ़, गागरोन, शाहबाद, इन्द्रगढ़, नाहरगढ़, जैसे किलों में राजस्थान की दुर्ग निर्माण तकनीक और

स्थापत्य कला का चरम उत्कर्ष देखा जा सकता है। यहाँ के किलों में –खाई, परकोटा, बुर्ज, सुरंग, गुप्त प्रवेश द्वार सिलहखाना, बन्दूक की मारे, जलाशय, बारूदखाना आदि विशेषताएं स्पस्ट दिखाई देती हैं। आहू व काली–सिंघ नदी के संगम पर स्थित प्राचीन व दुर्लभ राज्य का एक मात्र जल दुर्ग गागरोन भी इनमें से एक है जिसे यूनेस्को ने विश्व विरासत में शामिल किया है।

हाड़ोती के प्राचीन मंदिरों में राजस्थान का प्राचीनतम उपलब्ध मंदिर कोटा के दरा–मुकन्दरा में स्थित है, जो गुप्तकाल का है। राजस्थान में 689 ई. का अभिलेख युक्त प्राचीनतम मन्दिर झालरापाटन के चन्द्रभागा मन्दिर समूह में शिव मंदिर शीतलेश्वर महादेव का है। झालरापाटन में ही 98 फिट ऊँचा शिखर युक्त सूर्य मंदिर एक मात्र सम्पूर्ण व सुरक्षित मंदिर है, जिसे कोणार्क के सूर्य मंदिर के समकक्ष माना जाता है। शैवमत की तांत्रिक शक्तिपीठ की परम्परा में रामगढ़ का भण्डदेवरा मन्दिर बारां जिले में है। बूंदी जिले में कमलेश्वर मंदिर का निर्माण तंत्र साधना के निर्वाह हेतु हुआ। बाड़ोली का शिव मंदिर उत्तर भारत के प्रमुख मंदिरों में है। चांदखेड़ी, नागेश्वर, पार्श्वनाथ व झालरापाटन का शांतिनाथ मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से किसी से कम नहीं है। बूढ़ादीत का सूर्य मंदिर, हरिपुरा का पालेश्वर महादेव मन्दिर, केशोरायपाटन का कल्याण मंदिर आदि अनके ऐसे मंदिर हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करने का पूर्ण सामर्थ्य रखते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'राजस्थान : हाड़ोती पुरातत्व एक अध्ययन' में परिक्षेत्र के चार जिलों के संग्रहालयों के साथ – साथ प्रमुख पुरातत्व महत्व के स्थलों पर गहन अध्यन कर जानकारी प्रस्तुत की गई है। हाड़ोती क्षेत्र के संरक्षित स्मारकों यथा किलों, महलों, हवेलियों, प्राचीन भवनों, देवालयों, मस्जिदों, मठों, शैलचित्रों, बावड़ियों, कुण्डों आदि का समावेश किया गया है। पुरातत्व स्थलों के साथ – साथ अन्य ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन महत्व के स्थलों को शामिल कर

पुस्तक को पर्यटन की दृष्टि से भी उपयोगी बनाया गया है। विशेषता यह है कि पुरातत्व के साथ संस्कृति को जोड़ कर विषय को पूर्णता प्रदान की गई हैं। पुरातत्व भी संस्कृति का ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसे संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता है। इस कार्य में कोटा राजकीय संग्रहालय के संभागीय अधीक्षक श्री उमराव सिंह की सह लेखक के रूप में भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है।

पुस्तक के लेखक डॉ. प्रभात कुमार सिंघल इतिहास के अध्येता होने के साथ – साथ गम्भीर जनसंपर्क कर्मी, पर्यटन प्रेमी, लेखक और पत्रकार हैं। यही वजह रही कि इन्होंने ऐतिहासिक संदर्भ के साथ पर्यटन के विविध पक्षों पर कई पुस्तकें लिखी हैं और इनकी यह नवीन पुस्तक पाठकों के समक्ष है। मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, कलाप्रेमी, पर्यटकों, जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी साबित होगी। पाठकों को राजस्थान के हाड़ोती अंचल की संस्कृति, संग्रहालय और पुरातत्व से जोड़ कर पर्यटन विकास में सहायक बनेगी। इस पुस्तक के श्रम साध्य कार्य के लिए अपनी ओर से लेखकों को बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता की कामना करता हूं।

çk- ¼M,½ c't fd'kkj 'kekZ
52/30, प्रताप नगर,टोंक रोड,
जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल न. 9079049796

y[kdh;

किसी भी देश की समृद्ध सभ्यता की पहचान होती है वहां की अमूल्य कला – संस्कृति। सभ्यता के काल निर्धारण में पुरातत्व संपदा का विशेष महत्व है। खुदाई में उत्खन से प्राप्त पुरावशेष ही स्थान विशेष की सभ्यता के काल का निर्धारण करते हैं कि उस स्थान पर किस काल की सभ्यता निवास करती थी। भारत में विभिन्न स्थानों पर किए गए उत्खनन कार्य से अर्वाचीन सभ्यता के प्रमाण खोजे गए हैं। राजस्थान भी एक ऐसा राज्य है जहां अनेक स्थानों पर उत्खन में प्राचीन सभ्यताओं का पता चला हैं। उत्खन के साथ – साथ प्राचीन किलों, मंदिरों, शिलालेखों, मूर्तियों, गुफाओं, स्तूप, चौत्यों, शैलचित्रों, रंगचित्रों आदि भी किसी सभ्यता के काल निर्धारण के प्रबल माध्यम माने जाते हैं।

ऐसे ही समस्त साधनों के माध्यम से राजस्थान के हाड़ोती क्षेत्र में भी विभिन्न कालों के पुरावशेष खोजे गए और मौजूद हैं। हाड़ोती क्षेत्र में कोटा, बूंदी, बारां एवं झालावाड़ जिले शामिल हैं। राजस्थान के हाड़ोती क्षेत्र को पुरासंपदा का भंडार कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। हाड़ोती की पुरासंपदा का महत्व बताते हुए पर्यटन से जोड़ने का अकिंचन प्रयास किया गया है। इतिहास तथ्यपरक होता है कपोल कल्पित नहीं। इसका विशेष ध्यान रखा गया है कि विवरण तथ्यों पर आधारित हो।

हाड़ोती की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और पुरातत्व का अध्यन 17 अध्यायों में विभक्त कर सरल भाषा में पठनीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न स्थानों की मूर्तियों,कलात्मक पाषाण खंड और विविध पुरासामग्री का संग्रह और प्रदर्शन करते चारों जिलों के संग्रहालयों की विस्तृत जानकारी दी गई है। इनके साथ – साथ भारतीय पुरातत्व

सर्वेक्षण और राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा संरक्षित स्मारकों को अलग – अलग अध्यायों में जिलेवार अन्य ऐतिहासिक स्मारकों एवं पर्यटन स्थलों के साथ संयोजित किया गया है। अंतिम अध्याय में क्षेत्र की संस्कृति के महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डालते हुए अध्यन को पूर्णता प्रदान की गई है।

जयपुर निवासी मेरे गुरुदेव प्रो. (डा.) बृज किशोर शर्मा के प्रति तहे दिल से श्रद्धांवत कृतज्ञता व्यक्त करता हूं जिन्होंने मेरे अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर अपने अति व्यस्त समय से समय निकाल कर पुस्तक की भूमिका लिख कर किताब का महत्व दुगुनित किया। इस महत्वपूर्ण विषय पर इतिहास और पुरातत्व विशेषज्ञ कोटा वृत के अधीक्षक पुरातत्व एवं संग्राहालय विभाग राजस्थान श्री उमराव सिंह जी ने अथक परिश्रम के साथ अपनी सहभगिता जोड़ कर सह लेखक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया, वह हमेशा स्मरणीय रहेगा। इनके सक्रिय सहयोग से ही यह दुरूह कार्य सम्पन्न हो सका है। इसके प्रति मैं ह्रदय के गहनतम तल से उनका आभार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के कोटा स्थित अधिकारी श्री ताराचंद और चारों जिलों के राजकीय संग्रहालयों के स्टाफ द्वारा दिए गए सहयोग के प्रति सभी का साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

झालावाड़ के इतिहास एवं पुरातत्व विशेषज्ञ श्री ललित शर्मा ने न केवल उपयोगी तथ्यात्मक जानकारी और छायाचित्र उपलब्ध करवाये वरन अमूल्य मार्गदर्शन भी प्रदान किया। इनके इस सहयोग के प्रति मैं ह्रदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इसी प्रकार कोटा के इतिहासविद श्री फिरोज अहमद का भी उनके सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। समय – समय पर की गई मेरी हाड़ोती यात्रा में कोटा संग्रहालय के पूर्व अधीक्षक श्री किशन लाल, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व सहायक निदेशक श्री घनश्याम वर्मा,

अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी श्री राजेंद्र सिंह हाड़ा, बूंदी के पूर्व जनसंपर्क अधिकारी श्री रामफूल गुर्जर, सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री अर्जुन सिंह हाड़ा और झालावाड़ के अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी (वर्तमान में जयपुर) श्री अनिल त्रिवेदी का भरपूर सहयोग प्राप्त होने पर इन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। संदर्भ पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय, कोटा के संभागीय अधीक्षक डा. दीपक कुमार श्रीवास्तव एवं सहायक श्रीमती शशी जैन सहित विविध प्रकार सहयोग प्रदान करने के लिए एडवोकेट श्री अख्तर खान 'अकेला', वरिष्ठ पत्रकार श्री के. डी. अब्बासी, श्रीमती तकसीम बानो एवं वरिष्ठ पत्रकार सलीमुद्दीन काजी का भी तहेदिल से आभारी हूँ।

पुस्तक को त्रुटि रहित बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। आशा करता हूँ कि यह पुस्तक इतिहासविदों, पुरातत्व प्रेमियों, शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और हाड़ोती के पर्यटन विकास में सहायक बनेगी। आपके सुझावों का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

Mk- çHkkr dekj fl?ky

y[kd

vuØe

(1) dkVk jktdh; lxgky; dh fodkl ;k=k..... 1-9

(2) dkVk jktdh; lxgky; ijkrÙo nh?kk ;k=k..... 10-14

(3) dkVk jktdh; lxgky; 'ko efrdyk nh?kk..... 15-19

(4) dkVk jktdh; lxgky; o".ko efrdyk nh?kk..... 20-24

(5) dkVk jktdh; lxgky; vL=&'kL=] ifjèkku nh?kk 25-30

(6) dkVk jktdh; lxgky; ykd&thou nh?kk 31-36

(7) dkVk jktdh; lxgky; fp=dyk nh?kk..... 37-41

(8) dkVk jktdh; lxgky; tu efr nh?kk 42-46

(9) dkVk fty dh ijkrRo LFky..... 47-65

(10) jko ekèkkflg lxgky;] dkVk 66-73

(11) jktdh; lxgky;] cnh..... 74-80

(12) cnh fty dh ijkrRo LFky..... 81-96

(13) ckjk jktdh; lxgky; 97-99

(14) ckjk fty dh ijkrRo LFky..... 100-118

(15) jktdh; lxgky; >kykokM 119-126

(16) >kykokM ijkrRo LFky..... 127-147

(17) lL—fr..... 148-158

सन्दर्भ

1. ए.कनिंघम, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, भाग –2, रिपोर्ट 1862–65.

2. इम्पे. ई., द जर्नल ऑफ बॉम्बे ब्रांच, रॉयल एशियाटिक सोसायटी,खंड –5 (पार्ट–तीन) 1857ई. (डिस्क्रिप्शंस ऑफ द केव्स ऑफ कोलवी इन मालवा).

3. ढोढ़ियाल, बी. एन., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर झालावाड़, 1964.

4. भंडारकर,आर.जी., द जर्नल ऑफ बॉम्बे ब्रांच, रॉयल एशियाटिक सोसायटी, भाग – 22.

5. सिंह, रोहितकुमार, (स.), सुजस, वार्षिकांक, 2008.

6. भारतीय सांस्कृतिक निधि, झालावाड़ चैप्टर की शोध रिपोर्ट, 1982.

7. शर्मा,गोपीनाथ,राजस्थान का इतिहास, 1980.

8. आर्य,गौरीशंकर , नागेश्वर पार्श्वनाथ का सारगर्भित इतिहास, 1983.

9. इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडियाग –14, 1908.

10. कर्नल जेम्स टॉड, एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग दो,यूनिक ट्रेड्स, जयपुर, 1987.

11. राजकीय संग्रहालय झालावाड़ के रिकार्ड से प्राप्त जानकारी.

12. राजकीय संग्रहालय, बूंदी के रिकार्ड से प्राप्त जानकारी.

13. राजकीय संग्रहालय,बारां के रिकार्ड से प्राप्त जानकारी.

14. राजकीय संग्रहालय, कोटा के रिकार्ड से प्राप्त जानकारी.

15. राव माधोसिंह संग्रहालय, कोटा के रिकार्ड से प्राप्त जानकारी.

16. शर्मा, ललित, झालावाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन, सनातन प्रकाशन जयपुर, 2021.

17. शर्मा, डा.मथुरालाल, कोटा राज्य का इतिहास, भाग – प्रथम एवं द्वितीय. (वि.स. 1996).

18. गुप्ता, सावित्री, डिस्ट्रिस्ट गजेटियर कोटा, 1982.

19. श्रीवास्तव, डॉ.जगतनारायण, कोटा के महाराव उम्मेद सिंह और उनका समय, 1983.

20. शर्मा, ह्रदेश कुमार, निदेशक, पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर ,हाड़ोती के पुरातत्व स्थल.

21. गुप्ता, डा.मोहन लाल, कोटा संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्यन, जोधपुर, 2012.

22. भटनागर, धर्मेंद्र एवं सिंघल, प्रभात कुमार, कोटा एक विहंगम दृष्टि, ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, कोटा 2003.

23. सिंघल, डॉ.प्रभात कुमार एवं अग्रवाल, शिखा, ये है हमारी रंग बिरंगी बूंदी, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2020.

24. अहमद, फिरोज, हाड़ोती इतिहास लेखमाला, चंबल ग्राफिक प्रिंटर्स, कोटा, 2022.

25. ढोढ़ियाल, बी. एन., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बूंदी, 1964.

26. हाड़ोती यात्रा के लेखक के अपने अनुभव.

27. विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और समाचार पोर्टल्स पर प्रकाशित लेखक के आलेख.

28. विभिन्न सोशल साइट्स.